'भोलाराम का जीव' में निहित प्रशासनिक भ्रष्टाचार और सामाजिक विसंगति का आलोचनात्मक विश्लेषण

चित्रार्धनी पटेल
शोधार्थी: हिंदी विभाग
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (मध्य प्रदेश)
ईमेल: chitra221995@gmail.com संपर्क: +91-8770240245

सारांश :-प्रस्तुत शोध-आलेख सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की कालजयी रचना 'भोलाराम का जीव' के माध्यम से समकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और संवेदनहीनता का विश्लेषण करता है। यह शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार एक आम नागरिक सरकारी तंत्र की पेचीदगियों में फंसकर अपना अस्तित्व खो देता है।

प्रस्तावना :-हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के वे हस्ताक्षर हैं जिन्होंने व्यंग्य को केवल विनोद का साधन न मानकर उसे सामाजिक परिवर्तन का अस्त्र बनाया। 'भोलाराम का जीव' उनकी एक ऐसी सशक्त रचना है जो स्वतंत्रता के पश्चात के भारतीय लोकतंत्र की प्रशासनिक सड़ांध को उजागर करती है। यह कहानी यमलोक और मृत्युलोक के बीच एक व्यंग्यात्मक सेतु का निर्माण करती है।

प्रशासनिक भ्रष्टाचार और 'वजन' की अवधारणा:-हरिशंकर परसाई जी की कहानी 'भोलाराम का जीव' में 'वजन' शब्द का प्रयोग सत्ता के भ्रष्ट ढाँचे का प्रतीक है। इस कहानी में सरकारी दफ्तर का बाबू नारद से कहता है कि भोलाराम की दरख्वास्तें तो आई थीं, परंतु उन पर 'वजन' न होने के कारण वे फाइलों में खो गईं। यहाँ 'वजन' का अर्थ केवल रिश्वत नहीं है, बल्कि यह शक्ति, प्रभाव और सामाजिक दर्जे का प्रतीक है। जिसके पास राजनीतिक या आर्थिक 'वजन' नहीं है, उसकी पुकार सुनी ही नहीं जाती। यह आज के 'टेबल के नीचे से लेनदेन' की संस्कृति पर एक तीक्ष्ण और करारा प्रहार है। परसाई जी ने दिखाया है कि कैसे भारतीय नौकरशाही में भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हैं कि ईमानदार आवेदकों की दरख्वास्तें तब तक अपना मायाजाल नहीं हटातीं जब तक उन्हें 'उचित संदर्भ' या 'समुचित प्रभाव' न मिले। यह व्यवस्था न केवल भ्रष्ट है, बल्कि संवेदनहीन भी है।

आम आदमी की त्रासदी और पेंशन की विडंबना:-भोलाराम एक मध्यमवर्गीय ईमानदार कर्मचारी का प्रतीक है, जो अपने पूरे कार्यकाल में न्याय और सत्य के मार्ग पर चलता है। सेवानिवृत्ति के बाद जब उसे अपनी ही पेंशन के लिए सरकार का दरवाजा खटखटाना पड़ता है, तो यह भारतीय कल्याणकारी राज्य की एक बड़ी विडंबना है। भोलाराम की गाढ़ी कमाई, जो उसके जीवन भर की मेहनत का प्रतिफल है, उसे पाने के लिए उसे भ्रष्ट व्यवस्था के समक्ष झुकना पड़ता है।कहानी में भोलाराम की मृत्यु बीमारी से नहीं, बल्कि व्यवस्था की निर्दयता, उपेक्षा और आर्थिक विपन्नता (भूख) से होती है। यह दृश्य पाठकों के मन में गहरी पीड़ा पैदा करता है। एक ईमानदार नागरिक जो अपने देश की सेवा करता रहा, अंततः फाइलों के बीच खो जाता है। परसाई जी के माध्यम से यह सवाल उठता है कि क्या एक लोकतांत्रिक राष्ट्र में नागरिकों को इस तरह की पीड़ा झेलनी चाहिए?

संवेदनहीनता का गहन चित्रण:-कहानी में दफ्तर के उच्चाधिकारियों द्वारा नारद की 'वीणा' को रिश्वत के रूप में स्वीकार करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक क्षण है। वीणा संगीत का साधन है, सौंदर्य की प्रतीक है, किंतु भ्रष्ट व्यवस्था उसे मुद्रा में परिवर्तित कर देती है। इसके माध्यम से परसाई जी यह दर्शाते हैं कि भ्रष्टाचार की जड़ें कितनी गहरी हैं और यह कैसे सभी कुछ को अपने काले पंजों में जकड़ लेता है।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पूरी प्रक्रिया में मानवीय संवेदनाओं का कोई स्थान नहीं रह जाता। न तो भोलाराम की दुर्दशा किसी को द्रवित करती है,न ही उसके परिवार की पीड़ा। यह संवेदनहीनता ही आधुनिक नौकरशाही की सबसे बड़ी त्रासदी है। कागज, नियम-कानून और व्यवस्था मनुष्य से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

पौराणिक और आधुनिक का संयोजन:-परसाई जी ने पौराणिक पात्रों—नारद (देवताओं के दूत), चित्रगुप्त (कर्मों का लेखाकार) और यमराज (न्याय के देवता)—को आधुनिक नौकरशाही के साथ जोड़कर एक अनूठी व्यंग्य-रचना की है। यह संयोजन दर्शाता है कि भले ही शासन-व्यवस्था बदल गई हो, किंतु भ्रष्टाचार और अन्याय के मूल में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। प्राचीन काल में जो अन्याय थे, वे आज भी विद्यमान हैं, केवल उनका रूप बदल गया है।

सरल किंतु प्रभावशाली भाषा:-हरिशंकर परसाई जी ने अपनी कहानी में सरल, सुगम और दैनंदिन भाषा का प्रयोग किया है। इसके कारण यह रचना सभी वर्गों के पाठकों तक आसानी से पहुँचती है। कोई दुरूह शब्दावली या जटिल वाक्य-विन्यास नहीं है, जिससे विषय की गंभीरता को प्रभावित किया जा सके। इसके विपरीत, सरल भाषा में गहन विचार व्यक्त करना परसाई जी की कला का प्रमुख विशेषता है।

व्यंग्य और लक्षणा की कुशलता:-परसाई जी की शैली में लक्षणा (परोक्ष अर्थ) और व्यंजना (सुझाव) का सुंदर समावेश है। 'वजन' शब्द का प्रयोग करते हुए वे सीधे 'भ्रष्टाचार' शब्द का उपयोग नहीं करते, बल्कि एक सूक्ष्म रूपक के माध्यम से इसे व्यक्त करते हैं। यह व्यंग्य की सर्वोत्तम परंपरा है, जहाँ आलोचना इतनी कुशलता से की जाती है कि वह हास्य के साथ-साथ चिंतन को भी प्रेरित करती है।

पौराणिक संदर्भों का कौशलपूर्ण प्रयोग:-पौराणिक पात्रों (नारद, चित्रगुप्त, यमराज) का आधुनिक नौकरशाही के साथ मेल कराना परसाई जी के साहित्यिक कौशल की परिचायक है। इस तकनीक को 'ब्यंग्य-रूपक' (ironic parallelism) कहा जा सकता है। पाठक को एक ओर परिचित पौराणिक संदर्भ मिलते हैं, तो दूसरी ओर वे आधुनिक संदर्भों में एक नए अर्थ ग्रहण करते हैं। इससे साहित्य में गहराई और व्यापकता आती है।

व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता:-यह शोध-पत्र यह स्पष्ट करता है कि जब तक प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और मानवीय संवेदनशीलता सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक भोलाराम जैसे पात्र फाइलों के नीचे दबे रहेंगे और उनका जीवन नारकीय बना रहेगा। आधुनिक प्रौद्योगिकी, डिजिटलीकरण और ई-गवर्नेंस के माध्यम से कुछ सुधार अवश्य संभव है, किंतु जब तक मानवीय मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं दी जाएगी, व्यवस्था का चरित्र नहीं बदलेगा।

सामाजिक चेतना का आह्वान:-हरिशंकर परसाई की यह रचना केवल एक साहित्यिक कृति नहीं है, बल्कि समाज को अपनी चेतना जगाने का एक सशक्त आह्वान है। यह पाठकों से पूछता है कि क्या हम मौन दर्शक बने रहेंगे? क्या हम भोलाराम जैसे लोगों की पीड़ा को भूल जाएँगे? इसी क्षण की चेतना ही सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकती है।अंत में, परसाई जी की यह कहानी हमें याद दिलाती है कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक सचेतता और परिवर्तन का वाहक होना चाहिए। 'भोलाराम का जीव' इसी परंपरा की एक महान कृति है।

निष्कर्षतः 'भोलाराम का जीव' आज के समय में और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है। लगभग दो दशक पहले लिखी गई यह कहानी, आज के भ्रष्टाचार और अमानवीयकरण के इस दौर में एक मार्गदर्शक दस्तावेज़ प्रतीत होती है। हर दिन हज़ारों भोलाराम हमारे दफ्तरों में फाइलों के नीचे दबे होते हैं, उनकी आवाज़ें सुनी नहीं जातीं।

****

संदर्भ सूची :-

1. परसाई, हरिशंकर - 'परसाई रचनावली', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शुक्ल, रामचंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास।
3. समकालीन हिंदी व्यंग्य के विविध आयाम - शोध पत्रिकाएँ।